6

असाम्प्रदायिक मसीहियतः

एकता का एकमात्र आधार

पवित्र आत्मा नये नियम की अपनी शिक्षा में, परमेश्वर के लोगों से एक चिज़ और एक मन होने की मांग करता है। जिस व्यक्ति को यह पता नहीं है कि मसीह के विश्वासियों में फूट होना पाप है जिससे सच्ची मसीहियत का विनाश होता है उसने बाइबल की सबसे स्पष्ट शिक्षा को नज़रअंदाज कर दिया है। ''देखो, यह ज़्या ही भली और मनोहर बात है कि भाई लोग आपस में मिले रहें!'' (भजन संहिता 133:1)।

यीशु ने अपने पिता से प्रार्थना की थी:

> मैं केवल इन्हीं के लिए बिनती नहीं करता, परन्तु उनके लिए भी जो इनके वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे, कि वे सब एक हों। जैसा तू हे पिता मुझ में है, और मैं तुझ में हूं, वैसे ही वे ज़ी हम में हों, इसलिए कि जगत प्रतीति करे, कि तू ही ने मुझे भेजा। और वह महिमा जो तू ने मुझे दी मैं ने उन्हें दी है कि वे वैसे ही एक हों जैसे कि हम एक हैं। मैं उन में और तू मुझ में कि वे सिद्ध होकर एक हो जाएं, और जगत जाने कि तू ही ने मुझे भेजा ... (यूहन्ना 17:20-23)।

पिता और पुत्र की संसार में एक विश्वासी के दूसरे सभी विश्वासियों के साथ वैसे एक होने की, उद्धारकर्ज़ा की यह प्रार्थना मसीह के लोगों के एक होने की शिक्षा में मसीह के सब सच्चे प्रेमियों को बदलने के लिए काफी होनी चाहिए। यीशु द्वारा कष्ट की सबसे बड़ी घड़ी में यह प्रार्थना करना हर चेले के लिए और भी महत्वपूर्ण हो जाना चाहिए; वास्तव में यह एक बहुत बड़े बोझ के रूप में हर विश्वासी में होना चाहिए। विशेषकर तब जब किसी को इस एकता के लिए अपने प्रभु के उद्देश्य का ज्ञान हो: ज़्योंकि विश्वासियों में फूट जितना बड़ा कोई और पाप नहीं होगा ज़्योंकि यह संसार को मसीह में विश्वास लाने में रुकावट बनता है।

पौलुस ने लिखा है, ''हे भाइयो, मैं तुम से यीशु मसीह जो हमारा प्रभु है उसके नाम के द्वारा बिनती करता हूं, कि तुम सब एक ही बात कहो; और एक ही मत होकर मिले रहो'' (1 कुरिन्थियों 1:10)। एकता के लिए पवित्र आत्मा की ऐसी हार्दिक प्रार्थना होने पर, कोई सच्चा और आज्ञाकारी मन हमारे बीच पाए जाने वाले ऐसे पाप को कैसे नज़रअंदाज़ कर

सकता है ? यह कैसे हो सकता है कि एकता के लिए पवित्र आत्मा द्वारा दी गई शर्त को पूरा करने के लिए दूसरी किसी भी बात को न छोड़ा जाए ? वास्तव में मसीही लोगों में फूट डालने के लिए ज़िम्मेदार धर्म की किसी भी बात या रीति को मानना पापपूर्ण अपराध माना जाना चाहिए।

धार्मिक जगत में फूट के दो ही वास्तविक कारण हैं। पहला तो यह कि बहुत से लोगों ने जिनमें कुछ बहुत भले लोग भी हैं, इसे कभी पाप माना ही नहीं, बल्कि इसकी उपेक्षा करते हुए वे इसे कोई बड़ी बात नहीं मानते। दूसरा कारण यह है कि बहुत से धार्मिक और विश्वासी लोगों को, जो फूट से दुखी होते हैं, यह समस्या इतनी बड़ी लगती है कि उन्हें लगता है कि इसका समाधान हो ही नहीं सकता। दोनों प्रकार के लोगों में से कोई भी उस बात को पूरा करने का प्रयास नहीं करता जिसकी शिक्षा और आज्ञा हमारा प्रभु देता है; इसके बजाय दोनों ही परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन कर रहे हैं।

लेकिन कुछ लोग यीशु की आज्ञा को पूरा करने के लिए, ''अकेले ही हौद में दाखें [रौंदने]'' तैयार हैं (यशायाह 63:3)। तरसुस के शाऊल की तरह, वे मन में कह रहे हैं, ''हे प्रभु मैं ज़्या करूं ?'' (प्रेरितों 22:10)। वे व्यवसाय या अपनी सामाजिक स्थिति को छोड़ने के लिए और ''चुपचाप खड़े होकर'' ''जगत के कूड़े और सब वस्तुओं की खुरचन'' (1 कुरिन्थियों 4:13ख) बनने को तैयार हैं, ताकि वे अपने प्रभु को प्रसन्न करके उसकी इच्छा पूरी कर सकें। मैं इन्हीं के लिए लिखता हूं।

पवित्र लोगों में एकता का अच्छा परिणाम तब तक नहीं मिल सकता जब तक साज़्प्रदायिक कलीसियाएं बनती रहेंगी। जो बात इसे उत्साहित करती है वही बात यीशु के उस महिमामय लक्ष्य को पाने के प्रयासों में बाधा बनती है जिसके लिए उसने प्रार्थना की थी। ऐसा व्यज़्ति धार्मिक जगत में सबसे बड़ी बुराई को उत्साहित कर रहा होता है। विचार करें: संसार के कुछ सबसे अच्छे लोग (मन में) किसी दूसरे काम की तरह आंखें झपकते हुए उस काम को उत्साहित करके संसार में मसीह के काम में बाधा को समर्थन दे रहे हैं।

काश सब साज़्प्रदायिक कलीसियाएं लाइन तोड़कर उसमें से ''निकल आएं'' (देखिए प्रकाशितवाज़्य 18:4), परन्तु यथार्थ में हम ऐसी आशा नहीं कर सकते। साज़्प्रदायिकवाद को रोकने का एकमात्र ढंग इसकी बुराइयों को लोगों के सामने उजागर करना है। ताकि वे नये नियम के मसीहियों की तरह इसका त्याग कर दें और साज़्प्रदायिक कलीसिया नहीं बल्कि केवल मसीही बनें। केवल पहली शताज़्दी के मसीहियों की तरह ऐसे मसीही बनने का अर्थ ही पवित्र आत्मा के चलाए चलना, सिखाना, काम करना, सेवा करना और आराधना करना है जब उसने सारी सच्चाई में अगुआई देने के लिए संसार में आने के समय लोगों की अगुआई की थी। हम यदि लोगों में वैसे ही काम करते हैं, तो हम जान सकते हैं कि हम वैसे ही मसीही हैं जैसे नये नियम के मसीही थे: साज़्प्रदायिकवाद से बिल्कुल दूर।

यीशु ने प्रारज़्भिक मसीहियों को उनकी अगुआई के लिए पवित्र आत्मा के न आने तक संसार के उद्धार का महान काम आरज़्भ नहीं करने दिया था। उसने उन्हें ''रुककर'' ''बाट जोहने'' की आज्ञा दी थी। और उन्होंने उस आज्ञा को माना। पवित्र आत्मा आया, और हम

उसके आरज़्भिक काम और चेलों के साथ उसके काम को देखते आ रहे हैं। ज़्या यीशु आज के चेलों को उसी पवित्र आत्मा की अगुआई नहीं देना चाहता जिसकी अगुआई उसने अपने प्रारज़्भिक चेलों को दी थी? यदि उसने उस समय उन्हें पवित्र आत्मा की अगुआई के बिना काम नहीं करने दिया, तो ज़्या वह चाहेगा कि आज हम उसी अगुआई के बिना काम करें? कोई भी जो आज विश्वसनीय ढंग से और मन से आत्मा के उस काम को मानता है जो उसने उस समय आकर प्रारज़्भिक चेलों को अगुआई देने के लिए किया था, तो वह निश्चय ही पवित्र आत्मा की अगुआई में चल रहा है। वास्तव में, जहां तक हम जानते हैं, उसकी अगुआई में चलने का एकतात्र ढंग उन चेलों की बात मानना है।

उनके काम को अपना आदर्श और अगुआई देने वाला मानकर तथा अपने काम को इस ईश्वरीय नमूने के अनुसार बनाकर, हमें विवेक से और सावधानीपूर्वक काम करते हुए प्रत्येक बात को परखना चाहिए। हमने देखा कि यह प्रारज़्भिक काम यीशु के प्रचार, सुनने, निश्चित रूप से जानने, मन फिराने और बपतिस्मा लेने का था। फिर, इस नमूने को मानने वाला यीशु के पुनरुत्थान के बाद आने वाले पहले पिन्तेकुस्त के दिन पतरस और उसके सुनने वालों की तरह पवित्र आत्मा की अगुआई में चल रहा है। ऐसा प्रचारक नये नियम में बताए गए यीशु का प्रचार करता है, निश्चित रूप से अपने सुनने वालों से यह जानने की बिनती करता है कि क्रूस पर चढ़ाया गया यीशु प्रभु भी है और मसीह भी तथा उन सबको जिन्हें यह पता चल जाता है मन फिराने और अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेने को कहता है। वह किसी भी साज़्प्रदायिक कलीसिया की शिक्षा का प्रचार नहीं करता बल्कि बाइबल की ही शिक्षा देता है। ऐसे प्रचारक को किसी साज़्प्रदायिक कलीसिया के प्रचारक का नाम देने का अर्थ उस आदमी को और हमारे प्रभु की शिक्षा को गलत ढंग से पेश करना है।

पवित्र आत्मा के इस स्पष्ट उदाहरण से, सुसमाचार के प्रचार और संसार के उद्धार में लगे सच्ची लगन वाले लोगों में फूट कैसे पड़ सकती है? ज़्या यह उदाहरण स्पष्ट है? ज़्या हम इसे मान सकते हैं? निश्चय ही, यह पज़्की सड़क की तरह समतल और साफ है। इसकी व्याज़्या करने के लिए किसी नबी, याजक या प्रचारक की आवश्यकता नहीं है कि वह आकर अनपढ़ व अशिक्षित लोगों को इसका अर्थ समझाए ज़्योंकि इतना स्पष्ट है कि इसे पढ़ने वाला हर कोई आसानी से इसे समझ सकता है। ज़्या यह सज़्भव है कि पवित्र आत्मा ने ऐसी उलझाने वाली बातें बताई हैं कि सच्चाई की खोज करने वाले मन यीशु के लहू को भी गलत समझें? ज़्या आत्मा की शिक्षा इतनी अस्पष्ट है कि इसे पढ़ने वाला हर कोई अपना ही अलग गुट बना सकता है, जबकि यीशु उन्हें एक ही मन और एक ही समझ के होने की बिनती और आग्रह करता है? गलती किसकी है? यदि पवित्र आत्मा ने ऐसी शिक्षा दी है कि कोई उसे समझ नहीं सकता, तो निश्चय ही हमारे एक होने की उसकी बिनतियों का कोई महत्व नहीं है।

जिन लोगों में पतरस ने वचन सुनाया था ज़्या उनका उद्धार बपतिस्मा लेने से पहले हो गया था या बाद में? रास्ते में यहां हमें एक कांटा मिलता है। यहां पर भले और सच्चे मनों

के लोग एक दूसरे से अलग हो जाते हैं। ज़्या उन्हें अलग होने की आवश्यकता है? ज़्या पिन्तेकुस्त के उस दिन बपतिस्मा लेने वाले तीन हज़ार लोग इस बात पर असहमत हुए थे या वे सब एक थे? प्रार्थना सभा खत्म होने के बाद ज़्या विश्वासियों का एक गुट यह मानता था कि उनका उद्धार बपतिस्मे से पहले हो गया था और दूसरा यह कहता था कि उनका उद्धार बपतिस्मे के बाद हुआ है? नहीं, उनमें कोई फूट नहीं थी और हर किसी को पता था कि उनमें कोई धड़ेबाजी नहीं है। ऐसा ज़्यों नहीं था? ज़्या ये लोग संसार के सारे भागों से आकर इकट्ठे नहीं हुए थे? ज़्या उन्होंने अलग-अलग भाषाएं नहीं बोली थीं और ज़्या वे अलग-अलग देशों और संस्कृतियों से नहीं आए थे? तौभी, जैसे ही पतरस ने कहा, '' ... तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम में [NASB] बपतिस्मा ले; ...'' (प्रेरितों 2:38), तो उस बड़े जनसमूह में हर किसी को पतरस की बात समझ आ गई थी। हम ज़्यों नहीं समझ सकते? हम में उनसे ज़्या फर्क है? यह सच है कि हमारे पास पतरस के मूल संदेश का अनुवाद ही है, लेकिन ज़्या हमारा अनुवाद सही है? ज़्या हिन्दी या अंग्रेज़ी के शज़्द जिनमें पतरस की बात का अनुवाद किया गया है, समझने कठिन हैं?

अन्य शज़्दों में, मेरे प्रिय मित्रो, ज़्या आपको लगता है कि परमेश्वर के लोगों में धड़े और फूट डालने के लिए उन्हें गुटों में बांटने के लिए इसका अर्थ अपनी समझ से लगाना उचित है जबकि यीशु की प्रार्थना ही यह है कि वे सब एक हों? निश्चय ही, प्रेरितों 2:38 में पापों की क्षमा ''के लिए'' का छोटा सा शज़्द समझना कठिन नहीं है। इस आसान से शज़्द के अर्थ में एक कहानी है। इस आयत के अर्थ की कुंजी यही शज़्द है। ''निश्चय ही'' कोई कह सकता है, ''इस प्रश्न पर धार्मिक जगत की इतनी बड़ी फूट कि हमारा उद्धार बपतिस्मे से पहले होता है या बाद में, अंग्रेज़ी के शज़्द 'unto' के अर्थ पर नहीं है।'' यह पज़्की बात है कि तथ्य यही है। वास्तव में, धार्मिक जगत में पाई जाने वाली फूट के लिए कोई बहाना नहीं है। साज़्प्रदायिक कलीसियाएं तब तक बनी रहेंगी जब तक हम पूरी तरह से एक होने के लिए अपने उद्धारकर्ज़ा की बिनतियों की उपेक्षा करते रहेंगे।

पतरस ने इन लोगों को पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेने के लिए कहते समय बपतिस्मे को एक महत्वपूर्ण अर्थ में पापों की क्षमा से जोड़ा था। उसका कहने का ज़्या अर्थ था? यह हम अगले पाठ में देखेंगे।